नाहं मन्ये सुवेदेति नो न वेदेति वेद च।
यो नस्तद्वेद तद्वेद नो न वेदेति वेद च॥२॥

शिष्य : मैं ऐसा नहीं सोचता कि मैं ब्रह्म को भलीभाँति जान गया हूँ। परन्तु ऐसा भी नहीं है कि मैं उसे नहीं जानता हूँ, मैं उसे जानता भी हूँ। हम शिष्यों में से जो इस तथ्य को जानता है, वह ब्रह्म को जानता है। वह यह भी नहीं जानता कि वह ब्रह्म को नहीं जानता है।

क्या आप सचमुच भगवान् को चाहते हैं? क्या आप वास्तव में उनके दर्शन के लिए प्यासे हैं? क्या आपको सच्ची आध्यात्मिक क्षुधा है? जिस व्यक्ति को दर्शन की पिपासा है, केवल उसी का प्रेम विकसित होगा, केवल उसी को भगवान् का साक्षात्कार होगा। भगवान् के सन्दर्भ में माँग और पूर्ति का नियम लागू रहता है। यदि माँग सच्ची है, तो उपलब्धि भी तत्क्षण होगी। ह्रह्मस्वामी शिवानन्द

ब्रह्मचर्य-साधना :

पुरुषों तथा स्त्रियों में काम-वासना

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

यद्यपि स्त्री सौम्य तथा कोमल दिखायी देती है; किन्तु क्रोधावस्था में वह अशिष्ट, रूखी तथा स्पष्ट रूप से पुरुष-सदृश बन जाती है। क्रोध, प्रकोप, रोष तथा अमर्ष के प्रभाव में आ कर उसकी नारी-सुलभ शालीनता लुप्त हो जाती है। क्या आपने कभी स्त्रियों को सड़क पर लड़ते हुए देखा है? स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक ईर्ष्यालु होती हैं। उनमें मोह तथा काम-वासना अधिक होती है। वे पुरुषों से आठ गुना अधिक कामुक होती हैं। स्त्रियों में सहन-शक्ति अधिक होती है। वे अधिक भावुक होती हैं। पुरुष अधिक विवेकी होते हैं।

यद्यपि स्त्रियाँ अधिक कामुक होती हैं, तथापि उनमें संयम-शक्ति पुरुषों की अपेक्षा अधिक होती है। पुरुषों को प्रलोभित करने के पश्चात् वे मौन रहती हैं। वास्तविक अपराधी पुरुष ही है। वह आक्रमणशील होता है। वही सर्वप्रथम 'वर्जित फल' का आस्वादन करता है। वह सक्रिय होता है। कामाधीन होने पर वह अपनी बुद्धि, विवेक तथा समझ खो देता है और स्त्री की गोद में पलने वाला मनोरंजक कुत्ता बन जाता है। पुरुष जब एक बार स्त्री द्वारा बिछाये गये जाल-पाश में आ जाता है, तब उसके बच निकलने का कोई उपाय नहीं रहता।

स्त्री निष्क्रिय होती है। वह पुरुष को केवल लुभाती तथा बहकाती है। वह पुरुष के हृदय को उत्तप्त तथा उत्तेजित करती है। वह मुस्कराती तथा दृष्टिपात करती है और फिर चुप हो जाती है। वह प्रतीक्षा करती है। पुरुष आक्रामक है। वही वास्तविक अपराधी है।

पुरुष ही सबसे बुरा अपराधी है। वही वास्तविक बहकाने वाला है। वह आक्रामक तथा अतिक्रामक है। यदि पुरुष की ऐसी परम नीच प्रकृति न होती, तो सभी स्त्रियाँ मीरा, मदालसा तथा सुलभा होतीं। उसे ही सर्वप्रथम सुधारना तथा नया आकार देना चाहिए। उसमें उतना आत्म-संयम नहीं होता है, जितना कि स्त्रियों में होता है। स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा आठ गुना अधिक कामुक होती हैं, किन्तु उनमें कामावेग अथवा काम-प्रवृत्ति पर आठ गुना अधिक संयम-शक्ति होती है। यह पुरुष की कमजोरी है, यद्यपि वह शरीर तथा बुद्धि की दृष्टि से स्त्री की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हो सकता है।

स्त्रियाँ आपकी चाटुकारी करतीं, खुशामद करतीं तथा आपको फुसलाती हैं। वे चापलूसी की कला में प्रवीण होती हैं। उन्होंने आपको अपनी रमणीय भावाभिव्यक्ति, व्यवहार, तरुणाई की मनोरमता, नखरीली चितवन, हाव-भाव तथा मुस्कान से अपना दास बना रखा है। आपने अपने जीवन का पर्याप्त भाग इन्द्रिय-वासनाओं की मृगमरीचिका का पीछा करने में नष्ट कर डाला है। स्त्रियाँ अल्प काल तक ही मनोहर प्रतीत होती हैं; किन्तु कुछ समय पश्चात् तत्काल ही वे स्वास्थ्य तथा सुख-शान्ति की विनाशक बन जाती हैं। इन लुभाने वाली स्त्रियों से सावधान रहें, जो

आपको अपनी चापलूसी से फँसा लेती हैं। अब कम-से-कम अपने जीवन के शेष दिन गंगा जी के पावन तट पर मौन जप तथा ध्यान में व्यतीत करें।

बिच्छू का विष उसकी पूँछ में, नाग का उसके विष-दन्त में, मच्छर का उसकी लार में तथा चुगलखोर का उसकी जिह्वा में होता है। स्त्री के नेत्रों में विषाक्त बाण होते हैं। वह अपनी हृदयवेधी चितवन से निकलने वाले विषाक्त बाणों से कामुक युवकों को काम-वासना का सन्देश भेजती है तथा उनके हृदय को विद्ध करती है। किन्तु वह उस विवेकी व्यक्ति की कोई हानि नहीं कर सकती है जो सदा सतर्क रहता है तथा जो स्त्री के दोषों को देखता है और जो आत्मा के सत्-चित्-आनन्द-स्वरूप को, शुद्ध स्वरूप को जानता है।

नवयौवना कामुक महिलाओं के नेत्रों में जिह्वाएँ तथा तारयन्त्र होते हैं। वे अपनी प्रफुल्ल चितवनों के द्वारा कामुक नवयुवकों के पास अपने प्रेम-बाण तथा प्रेम-सन्देश भेजती हैं और उनके द्वारा उन्हें लुभाती तथा सम्मोहित करती हैं। जिन नवयुवकों में विवेक नहीं है, वे इन प्रेम-सन्देशों से उद्विग्न हो जाते हैं और काम-वासना के शिकार बनते हैं। यद्यपि उनमें उच्च महाविद्यालयीय शिक्षा होती है तथा वे उच्च पद और उपाधियों से सम्पन्न होते हैं, तथापि वे महिलाओं के क्रीड़ा-मृग अथवा गोद में पलने वाले मनोरंजक कुत्ते बन जाते हैं। कैसी लज्जा की बात है! विवेक, संकल्प-शक्ति तथा बुद्धि पूर्णतया लुप्त हो जाते हैं। साधको! किसी स्त्री से अधिक घनिष्ठता न बढ़ाइए। किसी मोहिनी स्त्री को रिझाने के लिए आपको जीवन के महान् आदर्शों का बलिदान नहीं करना चाहिए। शरीर की संरचना के विषय में सोचिए। जब कभी काम-वासना आपको कष्ट दे, तो किसी स्त्री के शव अथवा नर-कंकाल के मानसिक चित्र को अपने सम्मुख रखिए। काम-वासना का दमन करने की शक्ति आपको शनैः-शनैः प्राप्त होगी। शनैः-शनैः वैराग्योदय होगा। स्त्री के प्रति आकर्षण का कारण मन में वासनाओं की विद्यमानता है। उन्हें मिटा दीजिए। तब कोई आकर्षण नहीं रहेगा। जिन लोगों ने कामिनी तथा कांचन को त्याग दिया है, उन्होंने वास्तव में संसार का परित्याग कर दिया है। **(अनूदित)**

सूचना

श्री रामनवमी महोत्सव

श्री रामनवमी का पवित्र त्योहार भगवान् श्री विश्वनाथ मन्दिर में **३ अप्रैल २००९** को मनाया जायेगा। **२७ मार्च से ३ अप्रैल २००९** तक पवित्र श्री राम-मन्त्र का सामूहिक जप होगा। अन्तिम दिन लोक-कल्याण और विश्व-शान्ति तथा भक्तों के वैयक्तिक कल्याण के लिए विशेष संकल्प से यज्ञ किया जायेगा। अर्चना के साथ सायंकाल को आश्रम के सत्संग में एक विशेष प्रार्थना सभा भी होगी। जो भक्त श्री रामनवमी महोत्सव में सम्मिलित होना चाहते हैं, वे कृपया 'जनरल सेक्रेटरी, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, पत्रालय : शिवानन्दनगर, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन : २४९१९२' से सम्पर्क करें।

ह्ह्द डिवाइन लाइफ सोसायटी

अपने अन्तरिम आयाम को जानें २

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

अपने मन, इसके कार्यों, इसकी गतिविधियोंह्वह्व इसकी प्रत्येक अभिव्यक्ति को, चाहे वह भाव के रूप में हो, विचार के रूप में हो अथवा इसके अभिप्राय के रूप में होह्वह्वको अपने लिए एक सम्पत्ति के रूप में बनायें, एक बोझ, एक भार-रूप नहीं। नहीं तो आपके भीतर सदैव एक युद्ध की परिस्थिति बनी रहेगी। दो विचारों के बीच निरन्तर परस्पर खींचतान का संघर्ष रहेगा और आपकी शक्ति का अधिकांश अपने भीतर अपने ही द्वारा बनायी गयी उस परिस्थिति से जूझने में ही व्यय होता रहेगा।

आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व की समस्त शक्तियाँ स्वतन्त्र रहनी चाहिए। आपके उच्चतर जीवन और बाह्य जीवनह्वह्वदोनों को बुद्धिमत्तापूर्वक रचनात्मक और सकारात्मक ढंग से जीने के लिए यह शत-प्रति-शत उपलब्ध होनी चाहिए। नहीं तो नब्बे प्रतिशत तो यह आपके भीतर निरन्तर चलते रहने वाले संघर्ष में ही व्यय होती रहेगी, क्योंकि आपने बुद्धि-मत्तापूर्वक सावधान और सचेत रह कर अपने मन को इस ढंग से प्रशिक्षित नहीं किया कि आपका अन्तरिम आयाम सदा सकारात्मक, लाभप्रद और सब-कुछ प्राप्त करने में सहायक होह्वह्वआपको नीचे की ओर खींचने वाला, उलझन में फँसाने वाला और समस्याएँ उत्पन्न करने वाला न हो।

इसलिए भीतर सदैव एक सतर्क, गहन, रुचिपूर्ण दृष्टि रहनी चाहिए कि वहाँ क्या हो रहा है, और एक निरन्तर सतत प्रयास चलता रहना चाहिए कि यह पता रहे कि भीतर की स्थिति सदैव ऐसी बनी रहे जो आपको आगे ही ले कर जाने वाली हो, वहीं पर रोक कर रखने वाली या उससे भी बदतर, पीछे की ओर खींच लेने वाली न हो। यह साधक, जिज्ञासु, भक्त अथवा आध्यात्मिक व्यक्ति के दैनिक जीवन जीने की एक कला और विज्ञान है। और साधक के लिए तो अन्य व्यापारी, नौकरीपेशा व्यक्ति या उच्चाधिकारी किसी से भी अधिक बढ़ कर आवश्यक है।

अत: आज आपके इस महत्त्वपूर्ण आन्तरिक जीवन, आपके अन्तरिम आयाम अथवा आपके व्यक्तित्व के आन्तरिक स्तरह्वह्वजो कि आपके उच्चतर आध्यात्मिक जीवन तथा बाह्य स्थूल भौतिक जीवन के बीच की कड़ी हैह्वह्वके प्रति यह संकेत दिया जा रहा है। यह सांसारिक और आध्यात्मिकह्वह्वदोनों ही है। यह दोनों का ही भागीदार है। यह दोनों को ही प्रभावित करता है। और दोनों की ही सफलता इस पर निर्भर करती है कि इस तीसरे आयाम में क्या चल रहा है।

आप भले ही वर्षों तक निरन्तर साधना करते रहें, किन्तु यदि यह केवल आपके अभिमान, अहंकार को ही बढ़ा रही है, तब तो सब-कुछ समाप्त हो गया समझिए, आपकी समस्त साधना शून्य के बराबर है। यह सब धूल में मिल जायेगी। यह तो रेत के महल के समान है; क्योंकि आध्यात्मिक जीवन का मूल उद्देश्य उस बड़ी बाधा से छुटकारा पाने का प्रयत्न है जो

आपको विपत्ति में डाले हुए है, जो आपके ऊपर सवार है, आपका यह अहं-बोध, देह-बोध! यदि यह आपके मन, बुद्धि और विवेक के द्वारा अधिकृत नहीं होता, पकड़ाई में नहीं आता, और यदि आपका जप, ध्यान, व्रत, तप, साधना आदि आपके इस अहं-बोध को या तो बढ़ावा दे रहे हैं या इसे किसी प्रकार मिटा सकने अथवा कम करने में सहायक नहीं हो रहे हैं, तब तो भले ही आप कितना-कुछ भी करते रहें, आप फँसे हुए ही हैं, अभी आप अटके हुए ही हैं।

इसीलिए परम पावन गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी ने सैकड़ों भिन्न-भिन्न ढंगों से आपको उसके प्रति जाग्रत करने का प्रयत्न किया, जिसे इतना अधिक जानते हुए भी उस ओर इतना कम ध्यान दिया जाता है॥आपके उच्चतर आध्यात्मिक जीवन के प्रति नहीं, प्रत्युत आपके अन्तरिम आयाम, आपके आन्तरिक मानसिक जीवन के प्रति आपको जाग्रत करने का प्रयास किया। उन्होंने 'मन : रहस्य और निग्रह' इत्यादि जैसी कितनी ही पुस्तकें इस विषय को ले कर आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करने के लिए लिखीं। इस अन्त:साम्राज्य के कितने ही रहस्य आपके सामने रखते हुए उन्होंने अनेकों बहुमूल्य संकेत दिये॥''ब्राह्मण अभिमान त्यागो, संन्यास अभिमान का त्याग करो, डाक्टर अभिमान को छोड़ो तथा नाम, यश और जाति अभिमान को त्यागो।''

अत: अपने ऊपर निरन्तर दृष्टि रखने से आपको अत्यधिक लाभांश की प्राप्ति होगी। अन्तत: यह बाह्य जगत्, जो आपको चारों ओर से घेरे हुए है, यह आपके लिए वैसा नहीं है, जैसा यह दूसरों के लिए है। यह आपका अपना जगत् है। प्रत्येक व्यक्ति इस जगत् को जैसे देखता, समझता और ग्रहण करता है, जैसा इसके प्रति अपना दृष्टिकोण बनाता है, वैसा ही इसे अपने ही ढंग से अपने लिए रच लेता है। इस सभा भवन में यदि इस समय एक सहस्र लोग बैठे हैं, तो वह सब अपने अलग-अलग एक सहस्र संसारों में निवास कर रहे होंगे। प्रत्येक व्यक्ति अपने द्वारा रचे हुए भिन्न ही संसार में रहता है।

इसे समझें। यही मन है। आप अपने बाह्य जगत् का स्वयं ही सृजन करते हैं और जिस ढंग से आप इसे रचते हैं, वैसे ही यह आपको देखता है। यह ठीक उसी प्रकार से है जैसे कोई व्यक्ति दर्पण के सम्मुख खड़ा हो कर अपने प्रतिबिम्ब को देखे। वह प्रतिबिम्ब अविक्षुब्ध है, शान्त है अथवा अशान्त और नकारात्मक है, यह सब इस पर निर्भर करता है कि आप कैसे रूप में उसके समक्ष खड़े हुए हैं। यदि आप मुस्कराते हैं, तो वह मुस्कराता है। आप तेवर चढ़ाते हैं, तो वह भी तेवर दिखाता है; आप यदि क्रोधपूर्ण मुद्रा बनाते हैं, तो वह भी उसी प्रकार अप्रसन्नता दिखाता है।

और यह अन्तरिम आयाम ऐसा रहस्यमय अथवा गुह्य साम्राज्य है जिसे संसार में अन्य कोई नहीं जानता। अन्य व्यक्ति बाह्य चिह्नों से कुछ अनुमान लगाने का प्रयास भले ही करे; किन्तु वास्तव में अन्य कोई भी इसमें प्रवेश नहीं कर सकता। याज्ञवल्क्य तक नहीं जान पाये थे कि उनकी धर्मपत्नी मैत्रेयी के मन में क्या था। उन्होंने सोचा था कि उनके चले जाने पर उनकी पत्नी एक सुरक्षित जीवन की इच्छा रखेगी। श्री राम भी नहीं जानते थे कि सीता माता के मन में क्या है। उनका भी यही विचार था कि उनके वन-गमन के

पश्चात् वह घर में उनकी माता की सेवा में सन्तुष्ट रहेगी। उन्हें नहीं ज्ञात था कि सीता माता के भीतर क्या तत्त्व निहित था।

अत: ध्यान दें। इस अन्तरिम, गुह्य, आन्तरिक जीवन (जिसे आप, केवल आप ही जानते हैं) की ओर ध्यान दें; क्योंकि इसी के ऊपर आपकी सफलता या असफलता निर्भर करती है, आपका बन्धन या मोक्ष इसी पर आधारित है। आप अपने अन्त:साम्राज्य से जैसा बनाते हैं, वैसा ही आपका बाह्य जगत् बन जाता है। और आपका उच्चतर आध्यात्मिक आन्तरिक जीवन भी इसी पर निर्भर करता है कि आप इसे कैसे समझते हैं, कैसे इसका सारतत्त्व जानते हैं और कैसी बुद्धिमत्ता और विवेकशीलता से इसे जीते हैं।

परम पिता परमात्मा की शक्ति, जो आपके भीतर निवास करती है और इस अन्तरिम आयाम के रूप में अभिव्यक्त हो रही है, वह आपको क्षमता प्रदान करे कि आप इसे समझ सकें, इसका सदुपयोग कर सकें, इसे सकारात्मक सम्पत्ति बना सकें। दिव्य प्रबोधन के लिए, अपनी परिपूर्णता और मोक्ष के लिए इसे एक साधन बना सकें। यही मेरी विनम्र प्रार्थना है!

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

एक महत्त्वपूर्ण विज्ञप्ति

श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के दिव्य सान्निध्य में अनुभूत निजी संस्मरण

दिव्य जीवन संघ के अन्तर्राष्ट्रीय परमाध्यक्ष विश्वविश्रुत हमारे परम आराध्य ब्रह्मलीन परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के अति दुर्लभ सान्निध्य से प्राप्त मार्मिक अनुभवों, उनके आत्मोन्नयन, श्रेयमार्गोभिमुख आध्यात्मिकता से युक्त सर्वांगीण आदर्श जीवन यापन सम्बन्धी प्रभावी उपदेश, आदेश, सन्देश तथा उनके महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से निःसृत शिक्षाप्रद, आनन्दप्रद, रोचक एवं प्रेरक प्रसंगों तथा बहुविध साधना सम्बन्धी मधुर स्नेहिल संस्मरणों की लिखित अभिव्यक्ति के संकलन का शुभारम्भ अनेक सद्शिष्यों, भक्तों, साधकों तथा शुभेच्छुकों के विशेष हार्दिक अनुरोध-आग्रह को ध्यान में रखते हुए किया गया है। यदि आप इसमें प्रतिभागी होना चाहते हैं तो उपरोक्त विषयों से सम्बन्धित आपकी सारगर्भित विषय-सामग्री (टाइप करके भेजें तो उत्तम होगा) सन् २००९ के मार्च माह के अन्त तक अवश्य पहुँच जानी चाहिए। यथासम्भव यथाशीघ्र भेजें तो सराहनीय होगा।

E-mail: generalsecretary@sivanandaonline.org द्वारा "Sharing my memory with Swami Chidananda" विषय से भेजें। जो डाक विभाग द्वारा अपनी विषय-सामग्री भेजना चाहते हैं, वे लिफाफे के बाहर ''स्वामी चिदानन्द-सन्निधि में मेरे संस्मरण'' (Sharing my memory with Swami Chidananda) लिख कर निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें : **द प्रेजीडेंट, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड**

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

भावातीत विद्यमानता १

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

समष्टि और व्यष्टि रूप में आत्मा के तीन सापेक्षिक पक्षों का विश्लेषण हो चुका है। किन्तु सत्य वास्तव में न तो समष्टि रूप है और न ही व्यष्टि रूप है। इसे समष्टि रूप अथवा वैश्विक मानना भी कुछ सीमा तक इसे सृष्टि के समकक्ष मानने के समान है। परमेश्वर न तो कारण है और न ही कार्य है। इसके कोई कार्य स्वरूप नहीं हैं, अत: यह कारण भी नहीं है। सब पदार्थों से जब हम उसकी सादृश्यता ही मानते हैं, तो परमेश्वर को कारण कैसे कह सकते हैं?

माण्डूक्योपनिषद् अभिव्यक्त चेतना की न केवल स्थूल, सूक्ष्म और कारण अवस्थाओं को दर्शाता है, प्रत्युत इस रूप में भी चेतना का निरूपण करता है। किसी भी सम्बन्ध से स्वतन्त्र एक सत्ता है जो स्वयं में विराजित हो कर सत्य नाम से अभिहित है। विश्व के सम्बन्ध से ईश्वरत्व भी एक वाचक है। हम ईश्वर को सर्वेश्वर, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् कहते हैं; क्योंकि हम उसे 'सृष्टि' के दृष्टिकोण से देखते हैं। ईश्वर सर्वव्यापक है, ऐसा कह कर उसे हम देश की सीमा में मर्यादित करते हैं। वह सर्वज्ञ है, सब-कुछ जानता है, इसका अर्थ हुआ कि वस्तु जगत् है जिसे वह जानता है और सब वस्तुओं पर उसका पूर्ण अधिकार है अर्थात् वे वस्तुएँ उससे बाहर हैं और उन पर वह अपना प्रभुत्व स्थापित करने में समर्थ है।

सभी परिभाषाएँ, चाहे वे कितनी ही उत्कृष्ट क्यों न होंह्वह्वजैसे सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता, संहारकर्ता, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, ये सब सापेक्ष हैं। वे उस ईश्वर की 'तटस्थ लक्षणा' (आकस्मिक परिभाषा) हैं, 'स्वरूप लक्षणा' नहीं हैं जिसे हम सत्य की मूल प्रकृति कह सकते हैं। सृष्टि से पूर्व ईश्वर क्या था? वह उसकी स्वरूप लक्षणा अथवा मूल विशेषता (प्रकृति) होगी। अपने ही सारतत्त्व में ईश्वर सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता से कहीं अधिक कुछ और है, वह वस्तुओं के कारण से भी अधिक और प्रभुत्व, सर्वज्ञत्व और सर्वव्यापकत्व से भी अधिक कुछ और है। वह कौन-सा मूल तत्त्व है जो अपनी महिमा से और अपने ही गौरव से विद्यमान है? कौन-सा वह प्रकाश है जो दूसरों के द्वारा देखा नहीं जा सकता, जो प्रकाश देदीप्यमान् तो है किन्तु किसी वस्तु पर प्रकाशित नहीं होता? यही दशा है शुद्ध चेतना की, जो न कारण स्वरूप है, न सूक्ष्म है, न स्थूल है। न तो यह बाहर है और न ही भीतर। इसका कोई आभ्यन्तर नहीं, कोई बाह्य नहीं। यह महान् सत्य माण्डूक्योपनिषद् के सातवें मन्त्र में वर्णित है।

तुरीय आत्मा प्रज्ञा की चतुर्थ अवस्था है जो स्थूल, सूक्ष्म और कारणह्वह्वसभी सम्बद्ध अभिव्यक्तियों से अतीत है। जाग्रत प्रज्ञा यदि बाह्य है, तो स्वप्न प्रज्ञा अन्त:प्रज्ञा है। यह प्रज्ञा न अन्तः है, न बाह्य है; क्योंकि न तो यह स्वप्न में और न ही जागृति में है। यह अन्त:प्रज्ञ भी नहीं है और बाह्य प्रज्ञ भी नहीं (**'नान्त:प्रज्ञं न बहिष्प्रज्ञम्'**)ह्वह्वस्वप्न की भाँति

अन्त:प्रज्ञ भी नहीं और जाग्रत की भाँति बाह्य प्रज्ञ भी नहीं। ऐसा भी विचार हो सकता है कि यह प्रज्ञा दोनों अवस्थाओं में युगपत् भाव से भी पृथक् है अर्थात् समकालीन नहीं है। **'नान्त:प्रज्ञं न बहिष्प्रज्ञं नोभयत:प्रज्ञम्'**ह्वह्वएक ही समय में दोनों स्थान पर हो, ऐसा भी नहीं है।

'न प्रज्ञानघनम्'ह्वह्वयह प्रज्ञानघन भी नहीं है अर्थात् सागर में एकत्रित सम भाव जलराशि की भाँति चेतना का पुंज भी नहीं है। सार रूप में यह परिमाण सम्बन्धी भी नहीं है। परिमाण स्थान से सम्बद्ध होता है, गणित से सम्बद्ध होता है और प्रज्ञा में ऐसा नहीं है। अतः यह प्रज्ञानघन भी नहीं है; क्योंकि राशि का भाव आने पर आप संचित ढेर की कल्पना करते हैं, चाहे वह अपरिच्छेद्य शरीर ही क्यों न हो। प्रज्ञा ऐसी नहीं हैह्वह्व'न प्रज्ञानघनम्।' बिना जागृति के लक्षण रहित प्रज्ञा भी नहीं है यहह्वह्व**'न प्रज्ञम्'**।

आप सोच सकते हैं कि यह एक जागरूकता है जिसमें कोई भी पदार्थ समक्ष नहीं है। यह, यह भी नहीं है; क्योंकि पदार्थ तो प्रज्ञा में ही निहित है। यह पदार्थ अथवा विषय-शून्य प्रज्ञा नहीं है। इस प्रज्ञा में समस्त विषयों का लय हो चुका है। अत: इसे किसी लक्षण से शून्य आकाशीय चेतना की विमलता अथवा पारदर्शिता नहीं कह सकते। यह प्रज्ञा की अविद्यमानताह्वह्व**'न अप्रज्ञम्'** भी नहीं है। न्याय और वैशेषिक मत पर आधारित यह अनात्मवाद की अवस्था भी नहीं है। यह अप्रज्ञा (अचेतनता) नहीं है, प्रज्ञा का अभाव नहीं है, मात्र प्रज्ञा नहीं है, प्रज्ञा का राशि-पुंज नहीं है, बाह्य प्रज्ञा नहीं है, अन्त:प्रज्ञा नहीं है, उभय प्रज्ञा (**अन्तर्बहिः**) नहीं है, तो क्या है यह? ऐसा है परमेश्वर सार रूप में और अपने वास्तविक पूर्ण स्वरूप में!

'अदृष्टम्'ह्वह्वयह (जीवात्मा) अदृष्ट है। इसे देखा नहीं जा सकता। नेत्र कितनी भी चेष्टा क्यों न कर लें, इसे देखने में असमर्थ हैं। **'अव्यवहार्यम्'**ह्वह्वयह व्यवहार से परे है। इसे स्पर्श नहीं किया जा सकता, इसे ग्रहण नहीं किया जा सकता, इससे वार्तालाप नहीं हो सकता, आप इसे देख नहीं सकते, इसे सुन नहीं सकते। किसी प्रकार का व्यापार इसके साथ स्थापित नहीं किया जा सकता। इसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं जोड़ा जा सकता। यह असम्बद्ध है। सब प्रकार के सम्बन्धों से इसका प्रतिरोध है। न तो यह मैत्री-भाव में है और न ही शत्रु-भाव में। सभी प्राणियों का आत्मा इतना रहस्यमय है।

'अग्राह्यम्'ह्वह्वयह अग्राह्य है, क्योंकि इन्द्रियाँ इसे पकड़ नहीं सकतीं। हाथों से आप इसे पकड़ नहीं सकते, नासिका से सूँघ नहीं सकते, जिह्वा से इसका स्वाद नहीं ले सकते, कर्णों से श्रवण नहीं कर सकते, नेत्रों से दर्शन नहीं कर सकते। ऐसा कुछ भी सम्भव नहीं है। **'अलक्षणम्'**ह्वह्वअत: इसका कोई लक्षण नहीं है, यह अनिर्वचनीय है। इसकी कोई परिभाषा नहीं दी जा सकती, क्योंकि परिभाषा का सम्बन्ध गुणों से है जो देखे-सुने गये हों। परन्तु यहाँ तो एक ऐसा तत्त्व है जिसे आपने कभी श्रवण नहीं किया और न ही उसका दर्शन किया है। आप उसका संलक्षण कैसे बता सकते हैं? इस प्रकार प्राणियों की आत्मा की कोई परिभाषा नहीं है। इसके विषय में कोई कुछ भी नहीं कह सकता।

'अचिन्त्यम्'ह्नह्नमन इसका चिन्तन नहीं कर सकता। आप इस आत्मा का कोई विचार नहीं बना सकते। इसलिए सामान्य रूप से आप इस पर ध्यान भी नहीं कर सकते। आप इसे चिन्तन में नहीं ला सकते; क्योंकि चिन्तन में लाने का अभिप्राय है, इसे देश-काल की अवधि में लाना और बाह्यकरण करना। यह कोई विषय नहीं है। न तो यह विषय है और न ही देश-काल में सीमित है और इसी कारण यह अचिन्त्य है।

'अव्यपदेश्यम्'ह्नह्नअनिर्वचनीय, शब्दातीत है यह! वागेन्द्रिय इसकी महिमा का गुणगान नहीं कर सकती। कोई शास्त्र इसका वर्णन नहीं कर सकता। कोई सन्त इसकी व्याख्या नहीं कर सकता। ऋषियों-मुनियों का सम्पूर्ण ज्ञान मिल कर भी इसकी महत्ता के तुल्य नहीं हो सकता। मनीषियों के ज्ञान से यह अतीत है, अछेद्य है और अनुपमेय है। इस सत्य के अस्तित्व की यह विशेषता इसलिए है, क्योंकि यह किसी अन्य के द्वारा वर्णन के अयोग्य है। यह भौतिक प्रपंच, विषयों का एक पाश (जाल) है। परिभाषा हेतु, ज्ञान हेतु अथवा व्यवहार हेतु एक वस्तु का निर्देश दूसरी वस्तु के लिए दिया जाता है। व्यापार का सम्पूर्ण संसार 'अन्य' को उद्देश्य करके चलता है। पुनरपि, यहाँ ऐसा कोई उद्देश्य, निर्देश अथवा संकेत सम्भव नहीं है। शरीर और मन की समस्त क्रियाओं का मूक भाव है यह! शब्द से अतीत है यह! परम मौन है यह!

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

भारत के वीर और वीरांगनाएँ ४

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

कर्ण

कर्ण महाभारत के एक महान् योद्धा थे। वह अपनी दानवीरता के लिए प्रसिद्ध थे। वह माँ कुन्ती के गर्भ से ही स्वर्ण-कवच और कर्ण-कुण्डल ले कर जन्मे थे। उनका जन्म दुर्वासा ऋषि द्वारा कुन्ती को दिये गये सूर्य-मन्त्र का जप करने के फल-स्वरूप हुआ था।

कुन्ती ने अपने पुत्र को नदी में फेंक दिया और उसे अधिरथ नामक एक धीवर ने उठा लिया जो कि दुर्योधन का सारथि था। कर्ण ने परशुराम से धनुर्विद्या सीखी।

कर्ण किसी प्रकार से भी अर्जुन से कम नहीं थे। अर्जुन के रथ को भूमि में धँसा कर श्री कृष्ण ने उसकी (अर्जुन की) रक्षा की, अन्यथा कर्ण अर्जुन को मार देते। कर्ण का संहार अर्जुन के हाथों हुआ।

ध्रुव

एक राजा था। उसका नाम उत्तानपाद था। उसकी दो रानियाँ थींह्लसुरुचि और सुनीति। सुनीति का एक पुत्र था जो बड़ा सुशील था। उसका नाम ध्रुव था। सुरुचि उससे घृणा करती थी। उसने उसे राजमहल से बाहर कर दिया। इससे बालक बहुत दु:खी हुआ। वह भगवान् की कृपा से अपने पिता के राज्य के समान दूसरा राज्य पाने की कोशिश करने लगा।

नारद ऋषि ने बालक ध्रुव को **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** मन्त्र का उपदेश दिया। ध्रुव ने उस मन्त्र का जप किया। वह बड़ी निष्ठा से तपस्या करते रहे। आहार लेना भी उन्होंने छोड़ दिया। तब भगवान् वासुदेव उनके सामने प्रकट हुए। केवल स्पर्श से भगवान् ने उन्हें दिव्य ज्ञान दे दिया।

भगवान् के अनुग्रह से ध्रुव ने नक्षत्र-पदवी प्राप्त की। उन्हें शाश्वत सुख मिला, परम आनन्द की प्राप्ति हुई। नित्य-प्रति **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** मन्त्र का जप करो।

प्रह्लाद

हिरण्यकशिपु नामक एक राक्षस था। उसने तपस्या करके ब्रह्मा जी से यह वरदान प्राप्त किया कि संसार में उसे कोई देव, दानव या मानव मार न सके। उसे ईश्वर के नाम से घृणा थी। भगवद्-भक्तों को वह बहुत कष्ट देता था और उन्हें मार डालता था।

प्रह्लाद नामक उसका एक पुत्र था। प्रह्लाद भगवान् हरि के परम भक्त थे। उन्हें हिरण्यकशिपु खूब पीटता था और हरि का नाम लेने से मना करता था। प्रह्लाद अपने पिता की बात अनसुनी करके सदा ईश्वर की महिमा गाते रहते थे। उनके पिता ने उन्हें मार डालने का बहुत बार प्रयत्न किया। लेकिन सभी विपत्तियों से भगवान् ने उन्हें बचाया। भगवान् के प्रति हिरण्यकशिपु की घृणा अपनी आखिरी सीमा तक पहुँच गयी। अन्त में भगवान् नरसिंह का अवतार ले कर आये। उन्होंने हिरण्यकशिपु का संहार किया और प्रह्लाद की रक्षा की।

तुम भी प्रह्लाद के समान बनो।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

योग द्वारा स्वास्थ्य :

स्वस्तिकासन

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

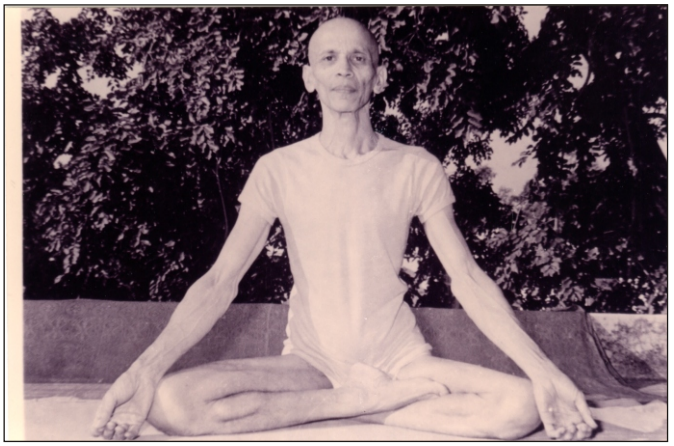

विधि

बायें पैर को मोड़ें और उसके अधोभाग को दाहिनी जंघा की मांसपेशियों पर रखें। इसी प्रकार दाहिने पैर को मोड़ें और उसे बायीं जंघा तथा पिण्डली की मांसपेशियों के मध्य के स्थान में डाल दें। अब आपके दोनों पैर जंघाओं तथा पिण्डलियों के मध्य में होंगे। हाथों को पद्मासन की भाँति रखें।

(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)

आन्तरिक योग-साधना

जब तक मन का नाश नहीं होता, वासना का भी नाश नहीं होता और जब तक वासना का नाश नहीं होता, मन का भी नाश नहीं होता। विवेक से भ्रष्ट हो कर जिस कारण से हम इन्द्रियों के सुखों में पड़ जाते हैं, वह वासना ही है। मन में जब तक वासना है, विषयों का स्वरूप भी वहाँ विद्यमान रहता है। विषयों के अलग-अलग स्वरूप और तज्जय आनन्द की भावना मन के भीतर बनी रहती है।

जब तक ब्रह्म का ज्ञान न हो, तब तक मन का नाश नहीं होता है; वैसे ही जब तक मन का नाश नहीं होता, ब्रह्म का ज्ञान भी नहीं होता। विचारवान् व्यक्ति विचारों से तथा योगी जन प्राणायाम द्वारा वासनाओं का क्षय करते हैं। प्राण और वासना का भी पारस्परिक सम्बन्ध है। एक के नाश से दूसरे का नाश अपने-आप ही हो जाता है। मन के कार्यकलाप जब अवरुद्ध हो जाते हैं, तो बाहरी दृश्य पदार्थों में कोई सत्ता नहीं महसूस होती; आप उनके संचार से प्रभावित नहीं होते।

मन के अवरोध में ईश्वर के नामोच्चारण का चामत्कारिक प्रभाव है। जैसे शहद में निमज्जित भ्रमर-वर्ग किसी अन्य सुस्वादु पेय की इच्छा नहीं करता, वैसे ही भगवन्नामोच्चारण में निमज्जित साधक बाहर के शोरगुल से उदासीन रहता है। मन को इस प्रकार एक लक्ष्य से बाँध कर ही आप देश-काल आदि से परे परमात्म-तत्त्व में प्रविष्ट हो सकते हैं।

स्वामी शिवानन्द

बाल-स्तम्भ :

वह मर कर भी अमर है

स्वामी रामराज्यम्

यह घटना पुरानी हैह्नह्नउन दिनों की है जब चित्तौड़ में राजपूतों का शासन था और दिल्ली में मुगलों का।

प्रताप* नाम का एक बालक चित्तौड़ में रहा करता था। वह राजपूत-सन्तान था, परन्तु उसकी युद्ध-कला सीखने में कोई रुचि नहीं थी। उसकी रुचि थी संगीत में। वह सितार बजा-बजा कर वीरता के गीत गाया करता था। उसके गीत सुन कर श्रोताओं की भुजायें फड़कने लगती थीं।

एक बार तत्कालीन मुगल सम्राट् ने चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी। बड़ा सुदृढ़ था चित्तौड़ का किला और बड़े शूरवीर थे चित्तौड़ के सैनिक। न तो मुगल सैनिक किले की दीवाल या फाटक तोड़ पाये और न वे किले के अन्दर से वार कर रहे राजपूत सैनिकों के अस्त्र-शस्त्रों की मार का सामना कर पाये।

चित्तौड़ के युवक अपने राज्य की सेना में भरती हो रहे थे। बालक प्रताप चित्तौड़ की बस्तियों में जा-जा कर वीरता के गीत गाता था और युवकों को सेना में भरती होने के लिए प्रोत्साहित करता था। बड़ा प्रभाव पड़ा उसके गीतों का। जल्दी ही राजपूत सैनिकों की संख्या दुगनी हो गयी।

एक दिन प्रताप किसी बस्ती में गीत गा रहा था। एक मुगल सैनिक ने उसका गीत सुना। वह उसे पकड़ कर अपने सेनापति के पास ले गया। सेनापति ने उससे पूछाह्नह्न''तुम हम लोगों को भी गीत सुनाओगे?''

''हाँ, हाँ, क्यों नहीं?'' उस बालक ने उत्तर दिया।

सेनापति सेना ले कर किले के पास पहुँचा। अपने साथ वह उस बालक को भी ले गया। उसने बालक को किले के फाटक पर खड़ा कर दिया और बोलाह्नह्न''अब तुम गीत सुनाओ।''

सेनापति ने सोचा था कि उसके गीत सुन कर राजपूत सैनिक समझेंगे कि उस बालक को ले कर कोई दूसरी राजपूत-सेना उनकी सहायता के लिए आयी है और वे किले का फाटक खोल देंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

बालक प्रताप गीत गाने लगा। गीत सुन कर राजपूत सैनिक सावधान हो गये और किले के अन्दर से पत्थरों की बौछार करने लगे। मुगल सैनिकों में भगदड़ मच गयी।

मुगल सेनापति गीतों की भाषा नहीं समझता था। उसने प्रताप से पूछाह्नह्न''लड़के! तुम क्या गा रहे हो?''

---

* यह बालक महाराणा उदयसिंह के पुत्र महाराणा प्रताप से भिन्न एक साधारण राजपूत बालक था।

प्रताप ने निर्भीकतापूर्वक उत्तर दियाह्न ''गा-गा कर मैं राजपूत सैनिकों को बता रहा हूँ कि सावधान हो जाओ, शत्रु द्वार पर खड़े हैं। शत्रुओं पर पत्थर मार-मार कर उनको पूरी तरह से नष्ट कर दो।''

क्रोध से सेनापति की आँखें लाल हो गयीं। उसने तुरन्त तलवार से उस बालक का सिर उसके शरीर से अलग कर दिया। मुगल सेना पत्थरों की मार से लहूलुहान हो कर वापस लौट गयी।

चित्तौड़ के राजा ने रोते हुए अपने हाथों उस वीर बालक के शरीर को चिता पर रखा।

बच्चो, मातृभूमि को शत्रुओं से बचाने के लिए ही नहीं, किसी भी अच्छाई की रक्षा करने के लिए संकट का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए वीरता का गुण होना अनिवार्य है। मर कर भी अमर हो कर बालक प्रताप तुमसे बार-बार यही कह रहा है।

□□□

केवल भारत में लागू

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के सदस्यता-शुल्क की एवं शाखाओं के सम्बद्धता-शुल्क की दरें

१. नवीन सदस्यता-शुल्क		रु. १५०/-
	प्रवेश-शुल्क	रु. ५०/-
	सदस्यता-शुल्क	रु. १००/-
२. सदस्यता नवीकरण-शुल्क (वार्षिक)		रु. १००/-
३. आजीवन सदस्यता-शुल्क		रु. ३,०००/-
४. संरक्षकता-शुल्क		रु. १०,०००/-
५. नयी शाखा खोलने का शुल्क**		रु. १०००/-
	प्रवेश-शुल्क	रु. ५००/-
	सम्बद्धता-शुल्क	रु. ५००/-
४. शाखा-सम्बद्धता (नवीकरण) शुल्क (वार्षिक)		रु. ५००/-

** नयी शाखा खोलने के लिए मुख्यालय से लिखित अनुमति लेनी होगी।

➲ कृपया सदस्यता-शुल्क और शाखा-सम्बद्धता-शुल्क इंडियन पोस्टल आर्डर अथवा ऋषिकेश में स्थित किसी भी बैंक के नाम बने डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

➲ सदस्यता ग्रहण करने, पत्रिका भेजने एवं दि. जी. सं. से सम्बन्धित अन्य विषयों के लिए कृपया पत्रिका-विभाग/शाखा-विभाग से सम्पर्क करें। फो.नं. ०१३५-२४४२३४०

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

'शिवानन्द होम' दिव्य जीवन संघ मुख्यालय का एक भाग है जो जरूरतमन्द तथा निर्धन जनों की सेवा करता है, वे जिन्हें चिकित्सा सहायता की आवश्यकता है परन्तु साधनहीन हैं, जिनके पास मानव सहायता तथा रहने के लिए आश्रय नहीं है, जिनका कोई परिचारक नहीं है तथा वे, जिन्हें समाज ने बहिष्कृत कर दिया है अथवा जो संक्रामक रोग से ग्रस्त हैं।

इस माह में शीत ऋतु आ चुकी है तथा विशेषकर उन्हें इसका आभास होता है जो सड़क के किनारे रहते हैं, रात्रि की शीत लहर में उससे बचने का प्रयास करते हैं। इस मास एक नया रोगी एक सज्जन व्यक्ति था जिसे आश्रम के मुख्यालय से लाया गया, जहाँ वह एक गन्दे कोने में अल्पपोषित, निर्जल अवस्था में पड़ा था तथा जिसे यह आभास नहीं था कि उसका शरीर उसके अपने मल में भीगा है। वह मानसिक तौर पर अर्ध-सचेत अवस्था में प्रतीत हो रहा था, पूर्ण रूप से अनुक्रिया नहीं कर पा रहा था, मानो जीवन बिना उसके चल रहा हो। यद्यपि, भोजन के समय वह पूर्णतया एक भिन्न व्यक्ति दिखायी देता। अपना ही भोजन नहीं, वरन् जो-कुछ भी वह पकड़ सकता, छीन सकता, जो-कुछ भी उसकी पकड़ में आता, वह उसे चबाता नहीं, बल्कि पूरी तरह से निगल जाता। क्या प्यास, कितनी अधिक भूख, अत्यधिक दुःख! शरीर की भूख तो समाप्त हो गयी; परन्तु लालसा, अत्यन्त अकेलेपन का क्षत, मानवीय मूल आवश्यकताओं के अभाव का क्रोध, परित्यक्त एवं विस्मरित, यह क्षत असह्य था।

बाबा जी ने अपनी रचनातन्त्र के बहिर्प्रवाह को न रोकने की आदत को चलायमान रखा, परन्तु शनैः-शनैः चिकित्सा के होते, शौच-प्रशिक्षण तथा समाज में दूसरों से व्यवहार में उन्होंने धीरे-धीरे प्रगति की तथा उसके आरम्भिक भाव-रहित मुख पर एक नये जीवन की किरण दिखायी दी। उसकी शारीरिक स्थिति भी दिन-पर-दिन प्रबल हो गयी, यद्यपि उसमें एच. आई. वी. सकारात्मक पाया गया जिसके लिए 'होम' में आवश्यकतानुसार सावधानी रखी गयी।

जिन्हें समाज से एक बार बहिष्कृत कर दिया जाता है, उन्हें एक सुरक्षित स्थान प्रदान किया जाता है। अपने-आपमें एक समाज, जहाँ नये परिवार जन्म लेते हैं, जहाँ एक असहाय दादी एक अनाथ बालक को खिलाती, अल्प बुद्धि वाली कोई महिला रोटी बनाने में सहायता करती, या एक अन्तेवासी आँखों से अक्षम एक भाई को रास्ता पार कराता हुआ देखे जा सकते हैं। यह ऐसी जगह है जहाँ दुःख, दर्द एवं निराशा के मध्य आशा की किरण तथा उनके मुख-मण्डल पर प्रसन्नता देखी जा सकती है, जो कभी अपनी भौतिक सम्पदा, यहाँ तक कि अपनी मानवीय प्रतिष्ठा तथा सम्मान खो बैठे थे। आपके पावन नाम का स्तुतिवाद हो। हे दिव्य स्वरूप, शून्य निनाद, रोगी के नयन, शिशु की मुस्कान, सार्वभौम प्रेम, अन्तःकरण में विराजित परमात्मा आप सबके लिए, सबमें एक और एक में सब हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हम कहीं भी हों, किसी भी समय, कैसे भी, किसी प्रकार भी, भले ही किसी दरिद्र या निराश मोड़ पर हों, उसकी अपार स्नेहमयी सत्ता के ज्ञान से अनुग्रहित हों।

''हे प्रभु, आप अतीत और वर्तमान के साक्षी हैं। मेरी समस्त गतिविधियों से परिचित हैं। मेरी वाणी में शब्द कहाँ जो आपका गुण-गान कर सके। आप ये सब जानते हैं। आपने सदा मुझे सहारा दिया है तथा अपना वरद-हस्त मुझ पर रखा है।'' (उद्धृत : प्रार्थना १३९, ओल्ड टेस्टामेन्ट)

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, अध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ का सांस्कृतिक भ्रमण

चिदानन्द हर्मिटेज शान्ति आश्रम, बालिगुआली, पुरी जाने के क्रम में दिव्य जीवन संघ के अध्यक्ष, परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज को स्वामी शिवानन्द कल्चरल एसोसिएशन और श्री एच. डी. शर्मा जी ने दिल्ली के भक्तों को सत्संग का अवसर प्रदान करने के लिए हार्दिक निमन्त्रण दिया। तदनुसार श्री स्वामी जी १३ दिसम्बर २००८ को दिल्ली पहुँचे। १४ दिसम्बर २००८ को अन्य कार्यकारियों के साथ श्री एच. डी. शर्मा जी ने स्वामी जी महाराज का पूर्ण-कुम्भ और मालाओं सहित पारम्परिक ढंग से स्वागत किया। श्री शर्मा जी ने, स्वामी जी का परिचय उपस्थित भक्तों से, स्वामी जी द्वारा दो महान् गुरुओंह्नपूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज और पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की, किये गये भव्य सेवाओं का उल्लेख करते हुए कराया। स्वामी जी ने संक्षिप्त वार्ता, भजन और कीर्तन के साथ सत्संग किया। सत्संग के बाद भक्त गण स्वामी जी से आशीर्वाद के लिए व्यक्तिगत रूप से मिले। मुख्यालय आश्रम से आये सर्वश्री स्वामी सेवानन्द जी महाराज, स्वामी वैकुण्ठानन्द जी महाराज और स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज ने स्वामी जी के साथ दिल्ली के भक्तों के साथ सत्संग किया।

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, अध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, उपाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ, श्री स्वामी सेवानन्द जी, श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द जी और श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी के साथ, तृतीय राज्य स्तरीय साधना गंगा कार्यक्रम, चिदानन्द हर्मिटेज शान्ति आश्रम, बालिगुआली, पुरी के सप्रेम निमन्त्रण पर वहाँ के लिए प्रस्थान किए।

स्वामी जी महाराज १५ दिसम्बर २००८ की रात्रि ९.१५ पर भुवनेश्वर हवाई-अड्डे पर पहुँचे। वहाँ सैकड़ों भक्तों, राज्यस्तरीय साधना गंगा कार्यक्रम की प्रबन्धन समिति के सदस्य श्री विप्रचरण पात्र, श्री जय चन्द्र नायक, श्री कैलास चन्द्र साहू एवं शिवानन्द सेन्टीनरी बॉयज उच्चविद्यालय, खण्डगिरि की प्रबन्धन समिति के सदस्य, भुवनेश्वर, पुरी, कटक और जाजपुर रोड दिव्य जीवन संघ के सदस्यों द्वारा फूल मालाओं एवं गुलदस्तों के साथ उनका सोत्साह भव्य स्वागत किया।

स्वामी जी महाराज, चिदानन्द हर्मिटेज शान्ति आश्रम, बालिगुआली, रात्रि के ११.४५ में पहुँचे। वहाँ दल के लोगों का सैकड़ों श्रद्धालुओं द्वारा बड़े-बड़े सुन्दर फूल मालाओं द्वारा गर्म-जोशी से स्वागत किया गया। भक्तों द्वारा महामन्त्र-कीर्तन के साथ, इस दल को एक भव्य जलूस के साथ पुरी-कोनार्क मैरीन-ड्राइव रोड होते हुए चिदानन्द हर्मिटेज शान्ति आश्रम के मुख्य-द्वार तक ले जाया गया।

गुरुदेव एवं प्रभु के दिव्य नाम की जय-ध्वनि से वातावरण संचरित हो रहा था। वैदिक विद्वानों ने स्वामी जी महाराज का स्वागत आरती एवं वेदमन्त्रोच्चारण के साथ किया। उसके पश्चात् स्वामी जी ने चिदानन्द दिव्य नाम मन्दिर में प्रवेश किया और नाम भगवान् को प्रणाम किया। वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ स्वामी जी महाराज को पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज के फूल-मालाओं और रोशनी से सजे विश्रान्ति कुटीर ले जाया गया।

१६-१२-०८ को स्वामी जी जटनी (खुर्दा रोड) को प्रस्थान किया। दिव्य जीवन संघ, खुर्दा रोड शाखा अपनी स्थापना का स्वर्ण जयन्ती मना रहा था। वहाँ सैकड़ों भक्तों ने स्वामी जी एवं अन्य का स्वागत किया। पहुँचते ही स्वामी जी ने शाखा के सत्संग भवन में मर्म-स्पर्शी कीर्तन किया। स्वामी जी ने दिव्य जीवन संघ का झंडोत्तोलन किया और शाखा के स्वर्ण-जयन्ती की यादगार में बनाये गये नये 'शिवानन्द स्तम्भ' का अनावरण किया। उसके बाद श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज के साथ स्वामी जी महाराज ने 'दिव्य जीवन आरोग्य केन्द्र' (कुष्ठ सेवा केन्द्र की स्थापना पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज द्वारा १९७६ में किया गया था) जटनी के सैकड़ों 'नारायणों' को कम्बल वितरण किया।

श्री स्वामी महाराज ने उपस्थित भक्तों को उत्साहित करते हुए अपने विनम्र अद्वितीय ढंग से हृदय की निर्मलता के लिए कर्मयोग करने को कहा। स्वामी जी ने कहाह्न''कर्मयोग और सतत नाम-स्मरण साधक को भगवत्-साक्षात्कार की ओर ले जाता है।'' जटनी शाखा के सभी पूर्व-अध्यक्षों, सचिवों एवं कर्मठ अनुभवी सेवकों को उनके निःस्वार्थ सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

स्कूल के प्रबन्धन समिति के आमन्त्रण पर स्वामी जी अपने दल के लोगों के साथ दिन में २.३० बजे शिवानन्द सेन्टीनरी बॉयज हाई स्कूल, खण्डगिरि, भुवनेश्वर पहुँचे। श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के नाम पर वर्ष १९८४ में स्थापित योग्यता-आधारित शैक्षणिक संस्थान का यह रजत-जयन्ती वर्ष है। श्री स्वामी जी और उनके दल के लोगों का वहाँ पहुँचने पर श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी महाराज, श्री भगीरथ महापात्र एवं प्रबन्धन समिति के अन्य सदस्यों ने स्वागत किया। स्काउट छात्रों ने बाजों-गाजों के साथ स्वामी जी को गुरु कुटीर ले गये।

पूज्य स्वामी जी ने सन्ध्या समय विद्यार्थियों, शिक्षकों और अन्तेवासियों के साथ मिल कर प्रार्थना सभा में सत्संग किया। स्वामी जी ने विद्यार्थियों को उनके जीवन में उनके लगातार प्रयासों और धैर्य से कैसे सफलता मिल सकती है इस पर एक सुन्दर कहानी सुना कर प्रोत्साहित किया। उन्होंने उन्हें समझाया कि कैसे वे सत्य, अहिंसा और पवित्रता के सिद्धान्तों को आत्मसात् कर एवं गान्धी जी के 'सादा जीवन, उच्च विचार' को अपना कर राष्ट्र का एक आदर्श नागरिक बन सकते हैं।

१७ दिसम्बर को प्रातः ९ बजे स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन का ध्वजारोहण चिदानन्द हर्मिटेज शान्ति आश्रम में किया और भक्तों से अनुरोध किया कि वे सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य और निःस्वार्थ सेवा का जीवन जी कर दिव्य जीवन की ध्वजा को ऊँचा रखें। उद्घाटन समारोह वैदिक मन्त्रोच्चारण, महाप्रभु जगन्नाथ एवं गुरुदेव स्वामी जी महाराज को माल्यार्पण से प्रारम्भ हुआ और उद्घाटन दीप-प्रज्वलन कर किया गया। उद्घाटन भाषण में पूज्य स्वामी जी महाराज ने कहा कि 'गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज और पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज हम सभी के माध्यम से काम कर रहे हैं, हम तो उनके हाथों का औजार हैं।'

उद्घाटन भाषण में स्वामी जी ने यह भी कहाह्न''पुरी में अनेकों मन्दिर हैं; लेकिन भक्त लाखों की संख्या में जगन्नाथ मन्दिर के दर्शन करते हैं क्योंकि यहाँ जीवन्त देवता के रूप में ईश्वर जाग्रत है। उसी प्रकार स्वामी चिदानन्द जी महाराज में ईश्वर पूर्णतया जाग्रत है। अतः आप सब यहाँ हैं।''

तत्पश्चात् प्रतिदिन पूज्य स्वामी जी महाराज सभी पाँच दिनों तक रात्रि सत्संग में, गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी महाराज के साथ १० वर्षों तक और स्वामी चिदानन्द जी महाराज के साथ ४० वर्षों से भी अधिक के सम्बन्धित अपनी साधना विषयक आध्यात्मिक अनुभव बतलाये।

सभी वार्ताओं का मुख्य तथ्य 'तव कथामृतम्' था। पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज और परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के साथ पूज्य स्वामी जी के निजी विभिन्न अनुभवों का वर्णन वस्तुतः उत्कल प्रदेश के शिष्यों और भक्तों (गोपियों) के लिए तो 'तव कथामृतम्' ही था। स्वामी जी के सभी वार्ताओं का सरल उड़िया अनुवाद परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने नित्य अपने समापन भाषण के साथ किया।

दिनांक १८-१२-२००८ को ११.५५ पूर्वाह्न में स्वामी जी महाराज ने चिदानन्द तपोवन शान्ति आश्रम के विश्रान्ति कुटीर के सामने 'चिदानन्द ध्यान मन्दिर' के लिए भूमिपूजन किया। स्वामी जी ने भक्तों को मन्त्र-दीक्षा भी दी।

श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज के साथ स्वामी जी ने १८ दिसम्बर की प्रातः वेला में और पुनः २१ दिसम्बर की रात्रि में महाप्रभु जगन्नाथ मन्दिर, पुरी गये और महाप्रभु का दर्शन किया।

स्वामी जी महाराज की सामान्य विनम्र और सहज शैली में, उनके अनुभव एवं शिक्षाएँ जो उन्होंने पावन गुरुओं से प्राप्त किया था, लगातार पाँच दिनों तक सुन कर भक्त भावविभोर

हो गये। हालाँकि ३५०० भक्त बैठ कर वार्ता को आत्मसात् कर रहे थे, पर वहाँ वातावरण बिलकुल शान्त था।

बालिगुआली आश्रम के प्रभारी स्वामी जितमोहनानन्द जी को, साधना गंगा के संयोजकों को और उन भक्तों को जिनके भाग लेने से वार्षिक साधना गंगा कार्यक्रम एक बड़ी सफलता प्राप्त कर सका, स्वामी जी महाराज ने धन्यवाद दिया।

माता 'विरजा', जो एक 'पौराणिक पीठ' है, के दर्शन के लिए स्वामी सेवानन्द जी, स्वामी वैकुण्ठानन्द जी, स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी और ब्रह्मचारी मलय जी के साथ स्वामी जी महाराज ने २२ दिसम्बर २००८ को जाजपुर के लिए प्रस्थान किया। पूज्य स्वामी जी महाराज एवं उनके दल का मन्दिर पहुँचने पर स्वागत किया गया और आरती उतार कर सम्मानित किया गया। उसके बाद पूज्य स्वामी जी ने जाजपुर रोड स्थित श्री कैलाश चन्द्र साहूजी के घर (डिवाइन होम) को पवित्र किया और सत्संग किया। परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज श्री साहूजी के इस घर पर कई बार गये थे और वहाँ ठहरे भी थे।

स्वामी जी महाराज एवं उनके दल के लोग भुवनेश्वर में श्री विप्रचरण पात्र जी के घर को पवित्र किया, सत्संग किया और रात्रि विश्राम भी किया। २३-१२-२००८ को दिल्ली के लिए रवाना हुए।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिसम्बर २००८ के समय, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने उड़ीसा प्रदेश की सांस्कृतिक यात्रा की।

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज के साथ स्वामी जी १६ दिसम्बर को जटनी, उड़ीसा में दिव्य जीवन संघ खुर्दा रोड शाखा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव में गये। शाखा का उद्घाटन १९५९ में हुआ था तथा २००९ में इसे ५० वर्ष पूर्ण होंगे। उस दिन शाखा का एक कार्यक्रम था जिसमें कुष्ठरोगियों को भोजन एवं वस्त्र वितरित किये गये तथा जिनको दिव्य जीवन आरोग्य केन्द्र द्वारा निरन्तर सेवा प्रदान की जा रही है। इस स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की शृंखला में एक सत्संग एवं लोक-संगोष्ठी भी हुई।

अपराह्न में वे खण्डगिरि, भुवनेश्वर में शिवानन्द सेन्टेनरी बॉयज हाई स्कूल गये जिसके अध्यक्ष स्वामी जी महाराज हैं। स्वामी जी ने प्रबन्ध समिति के सदस्यों, छात्रों तथा अध्यापकों के साथ गोष्ठी में अध्यक्षता की, जो परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज के आगमन के सन्दर्भ में आयोजित की गयी थी।

१७ से २१ दिसम्बर तक स्वामी जी ने साधना गंगा कार्यक्रम के अन्तर्गत चिदानन्द तपोवन शान्ति आश्रम, बालिगुआली, पुरी में आयोजित तृतीय वार्षिक राज्य स्तरीय साधना शिविर में भाग लिया। इस साधना शिविर में उड़ीसा की विभिन्न शाखाओं से पधारे लगभग ३५०० प्रतिनिधि तथा भक्तों (जिनमें युवा भी थे) ने भाग लिया। स्वामी जी ने शिविर की अध्यक्षता की तथा उसके विभिन्न सत्रों में भाग लिया तथा प्रातःकाल से सायंकालीन सत्संग तक प्रवचन दिये। प्रातःकालीन ध्यान सत्र तथा सायंकालीन सत्संग में वक्तव्य देने के अतिरिक्त स्वामी जी ने प्रतिदिन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के 'समन्वययोग' पर भी विचार व्यक्त किये। अपराह्न के शिविर में एक युवा शिविर भी था, जो विशेषकर उन्हीं के लिए था, जिसमें स्वामी जी ने छात्रों के प्रश्नों का उत्तर देने के अतिरिक्त उन्हें सम्बोधित भी किया। स्वामी जी ने विशेष रूप से 'जीवन में सफलता एवं दिव्य जीवन', 'युवाओं का देश, समाज, परिवार एवं स्वयं के प्रति कर्तव्य', 'अच्छा चरित्र' आदि विषयों पर वक्तव्य दिया। पूरे उड़ीसा प्रान्त से ५०० से अधिक युवाओं ने युवा शिविर में भाग लिया।

राज्य-स्तरीय साधना शिविर तथा युवा शिविर हर प्रकार से सफल रहे। उनका आयोजन विलक्षण था तथा प्रतिभागियों के लिए अत्यन्त हितकर एवं प्रेरणास्पद था। स्वामी जी अनेक भक्तों से भी मिले, जिन्होंने उनसे वार्तालाप किया।

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज का सांस्कृतिक भ्रमण

विद्यार्थी-वर्ग में मूल्यों पर आधारित शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने के लिए भारतीय विद्या भवन भारतवर्ष के अनेकों बड़े और छोटे शहरों में विद्यालयों और महाविद्यालयों का संचालन करता है। उसके द्वारा संचालित सभी जीविकोन्मुख शैक्षणिक संस्थानों में कुछ मूलभूत नैतिक मूल्यों को सन्निहित करने हेतु भारतीय सांस्कृतिक विरासत को एक अनिवार्य विषय रखा गया है। भारतीय विद्या भवन दिल्ली के सरदार पटेल संचार एवं प्रबन्धन महाविद्यालय में श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज को 'वेदों का गठन एवं विषय और भारत की संस्कृति में उनकी प्रासंगिकता' पर संचार एवं प्रबन्धन के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के समक्ष भाषण के लिए आमन्त्रित किया। तदनुसार श्री स्वामी जी ने दिनांक १७ जनवरी २००९ को एक अन्तर-सम्पर्कीय सम्भाषण किया। भाषण को बहुत सराहा गया। भाषण के पश्चात् विद्यार्थियों ने प्रश्न भी पूछे। प्राचार्य प्रोफेसर एन.एन. पिल्लई ने स्वामी जी को धन्यवाद दिया और उनसे अनुरोध किया गया कि जब भी सम्भव हो, वे पुनः महाविद्यालय में पधारें और विद्यार्थियों से मिलें।

दिनांक १८ जनवरी २००९ को श्री स्वामी जी ने श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द के साथ अमर कालोनी, नई दिल्ली स्थित शिवानन्द सत्संग भवन द्वारा आयोजित सहस्रनाम यज्ञ (हवन) में भाग लिया। यज्ञ के बाद वहाँ एक संक्षिप्त सत्संग और भण्डारा भी हुआ। अपराह्न में श्री स्वामी जी दिव्य जीवन संघ, गुड़गाँव शाखा गये और सत्संग भी किया।

पूज्या ज्ञानेश्वरी माता जी के आमन्त्रण पर श्री स्वामी जी तोटपल्ली, आन्ध्र प्रदेश 'शान्ति आश्रम' गये और श्री स्वामी ओंकार के ११५ वें जन्मोत्सव समारोह में भाग लिया। श्री स्वामी जी ने शान्ति आश्रम की वेबसाइट www.santhiashram.org का उद्घाटन भी किया और एक प्रवचन भी किया।

शान्ति आश्रम, तोटपल्ली से श्री स्वामी जी आन्ध्र प्रदेश के वोंगले जिला के कारावड़ी गाँव गये जहाँ 'सर्व आन्ध्र प्रदेश दिव्य जीवन संघ' का ३५ वाँ अधिवेशन दिनांक २३ से २५ जनवरी २००९ तक आयोजित किया गया था। श्री साईबाबु, श्रीमती गीता, श्री एन. चेंगल रेड्डी एवं अन्य द्वारा एक छोटे से गाँव कारावड़ी में अधिवेशन का सुसंगठित आयोजन किया गया था। तीन दिन के इस अधिवेशन में करीब ३००० ग्रामीणों ने भाग लिया। कई बातों में यह अधिवेशन अद्वितीय था। पूज्य गुरुदेव के सन्देश को निम्नतम सतह तक पहुँचाया गया था। तीनों दिन श्री स्वामी जी ने उपस्थित समूह को सम्बोधित किया। श्री स्वामी जी के अतिरिक्त बड़े-बड़े विद्वानों : श्रीमती बी. अरुणा देवी, सिकन्दराबाद, श्री एम. टी. अल्वार, हिन्दूपुर, श्री समुद्राल लक्ष्मणय्या, श्री सी. वेंकट शेषैया, गुन्टूर, डा. एन. दीक्षित, परम पूज्य श्री स्वामी विद्यास्वरूपानन्द जी, श्री शुकब्रह्म आश्रम, श्रीकालहस्ती, श्री स्वामी ओमानन्द, श्री स्वामी प्रसन्नानन्द ने पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी और श्री स्वामी चिदानन्द जी के जीवन और उनके सन्देश एवं दिव्य जीवन आन्दोलन के बारे में उपस्थित जन-समूह को भिन्न-भिन्न दिनों में सम्बोधन कर बताया।

उसके बाद श्री स्वामी जी बैंगलोर से ६० किमी दूर स्थित भोग नन्दी पहाड़ी गाँव गये। दिव्य जीवन संघ की बैंगलोर शाखा ने २६ जनवरी २००९ को एक आध्यात्मिक शिविर का आयोजन किया। उस शिविर में स्वामी जी ने भाग लिया और गुरुदेव के जीवन पर एक भाषण दिया। स्वामी जी दिव्य जीवन संघ की बैंगलोर शाखा भी गये और २७ जनवरी को भक्तों के साथ सत्संग किया। दिनांक २८ जनवरी को श्री स्वामी जी श्री गीता आश्रम जो श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज चलाते हैं, जहाँ ८० अनाथ बच्चे रहते हैं, गये। श्री स्वामी ओमानन्द जी गीता आश्रम के माध्यम से अनाथ बच्चों को उनकी शिक्षा के लिए निकटस्थ विद्यालयों में भेजने में सहायता करते हैं। स्वामी जी ने उन बच्चों को सम्बोधित किया और उनके साथ सत्संग किया।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

अहिवारा (छत्तीसगढ़): दैनिक सान्ध्य-सत्संग, विशेष पूजा और एकादशी की तिथियों को महामृत्युंजय मन्त्र का जप।

अम्बाला (हरियाणा): दैनिक सत्संग तथा आधिक्य में उसमें प्रति रविवार, सोमवार और बुधवार को मन्त्र-जप, प्रति मंगलवार और शनिवार को श्री हनुमान् जी के स्तोत्रों के पाठ, प्रति गुरुवार और शुक्रवार को भजन; वीडीओ सत्संग प्रति माह के द्वितीय रविवार को; होमियोपैथिक औषधालय।

बड़कुँआल (उड़ीसा): दैनिक द्विवार पूजाएँ; प्रभात में स्तोत्र-पाठ और गोपाल सहस्रनाम, सायंकाल में भजन-कीर्तन और भागवत पाठ; प्रति गुरुवार को प्रभात में पादुका-पूजा और सन्ध्या को साप्ताहिक सत्संग; 'शिवानन्द दिन' को पादुका-पूजा; शाखा में तथा समीपवर्ती ग्रामों में विशेष कीर्तन; एकादशी की तिथियों को कीर्तन।

बलांगिर (उड़ीसा): प्रति शनिवार को सत्संग; प्रति रविवार को भक्तों के निवास-स्थान पर पादुका-पूजा।

बरबिल् (उड़ीसा): प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग; शिवानन्द चैरिटेबल होमियोपैथी औषधालय जो प्रति माह ४०० मरीजों के इलाज करता है।

बरगढ़ (उड़ीसा): दैनिक द्विवार पूजाएँ; प्रति शनिवार को साप्ताहिक सत्संग; प्रति रविवार को भगवद् गीता वर्ग; नारायण-सेवा सहित 'साधना दिन'; होमियोपैथिक औषधालय; दैनिक स्वाध्याय तथा योग-वर्ग; मासिक अंक।

बल्लारि (कर्नाटक): दैनिक पूजा, प्रति रविवार को सत्संग और पादुका-पूजा।

ब्रह्मपुर (उड़ीसा) : प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा; 'शिवानन्द दिन' और 'चिदानन्द दिन'; प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग; एकादशी की तिथियों को भगवद् गीता पारायण; प्रति शनिवार को सुन्दरकाण्ड पारायण।

भंजनगर (उड़ीसा) : 'Ponder These Truths' के स्वाध्याय सहित रविवारीय सत्संग; श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र तथा अन्य स्तोत्रों के पाठ उभय एकादशी को।

भवानीपाटना (उड़ीसा): सप्ताह में द्विवारह्वह्व गुरुवार तथा रविवार को सत्संग; 'शिवानन्द दिन' तथा 'साधना दिन' को पादुका-पूजा, 'मासिक साधना दिन'।

भिलाई (छत्तीसगढ़) : श्री हनुमान् जी के स्तोत्र-पाठ प्रति मंगलवार तथा श्री ललिता सहस्रनाम के पारायण प्रति शुक्रवार सहित मातृ-सत्संग; एकादशी के सत्संगों में श्रीमद् भगवद् गीता तथा श्री विष्णु सहस्रनाम।

भुवनेश्वर (उड़ीसा): प्रति गुरुवार को सत्संग, 'चिदानन्द दिन' को १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप।

बीकानेर (राजस्थान): दैनिक द्विवार पूजा और प्रदोष को विशेष पूजा; गुरुदेव की पुस्तकों के स्वाध्याय सहित दैनिक दो घण्टों का सत्संग, प्रति माह द्वितीय मंगलवार तथा अन्तिम शनिवार को मातृ-सत्संग;

'शिवानन्द दिन' को पादुका-पूजा तथा विशेष सत्संग; 'चिदानन्द दिन' को यज्ञ और पादुका-पूजा।

विलासपुर (छत्तीसगढ़) : साप्ताहिक सत्संग।

भीमकाण्ड (उड़ीसा): दैनिक पादुका-पूजा, प्रति रविवार को सत्संग।

चण्डीगढ़ : 'श्री रामचरित मानस' के स्वाध्याय सहित दैनिक सान्ध्य-सत्संग। 'भगवद् गीता', 'साधना' और 'A Call to Liberation' के स्वाध्याय सहित प्रति रविवार को प्रभात में सत्संग; मासिक चल-सत्संग; प्रतिदिन प्रभात में और सायंकाल में योगासन-वर्ग; होमियोपैथिक औषधालय; आध्यात्मिक पुस्तकालय; प्रति रविवार को २०० निर्धन जनों को निःशुल्क भोजन; 'शिवानन्द दिन' को १२ घण्टों पर्यन्त महामन्त्र का अखण्ड जप।

छत्रपुर (उड़ीसा): दैनिक सान्ध्य-सत्संग; प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग; 'शिवानन्द दिन' और 'चिदानन्द दिन' को पादुका-पूजा; 'संक्रान्ति दिन' को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण।

चेन्नै, अन्ना नगर (तमिल नाडु): दैनिक योगासन-वर्ग के साथ-साथ सप्ताह में त्रिवार महिलाओं तथा बालकों के लिए विशेष वर्ग; भारतीय विद्या भवन की परीक्षाओं के लिए निःशुल्क संस्कृत-वर्ग।

चिकिटि (उड़ीसा): प्रति गुरुवार को प्रभात में पादुका-पूजा और सायंकाल में सत्संग।

गान्धी नगर (गुजरात) : सप्ताह में त्रिवार सत्संग; दैनिक रूप से सायंकाल में महिलाओं के लिए और प्रभात में सबके लिए योगासन-वर्ग; प्रति माह दिनांक १ से दिनांक १० पर्यन्त योगासन तालीम-वर्ग; होमियोपैथिक औषधालय; स्वामी शिवानन्द पुस्तकालय; 'शिवानन्द दिन' को नारायण-सेवा; 'चिदानन्द दिन' को शालेय छात्रों के लिए नारायण-सेवा; कुष्ठरोगियों की एक संस्था को और निर्धन मरीजों को आर्थिक सहाय।

घाटपदमुर, जगदलपुर (छत्तीसगढ़): शाखा के निज शिवानन्द आश्रम में दैनिक प्रभातीय प्रार्थना, ध्यान, स्तोत्र-पाठ; दैनिक ३० मिनट संकीर्तन; दैनिक सान्ध्य-सत्संग; प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा; प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण; प्रति रविवार को श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण; दैनिक योगासन-वर्ग।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): शाखा के निज स्थानिक शिवानन्द आश्रम के 'समाधि मन्दिर' तथा 'श्री विश्वनाथ मन्दिर' में त्रिवार पूजाएँ; दैनिक प्रभातीय प्रार्थना-सभा; दैनिक योगासन-वर्ग; दो घण्टों पर्यन्त सान्ध्य-सत्संग; प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा; प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण; प्रति सोमवार को शिवजी भगवान् के स्तोत्रों के पाठ; प्रति शुक्रवार को देवी-स्तोत्रों के पाठ।

जयपुर, मालवीय नगर (राजस्थान): दैनिक एक घण्टे पर्यन्त ध्यान-सभा; अध्ययन-गोष्ठी में दैनिक स्वाध्याय; प्रति रविवार को हवन और सत्संग; प्रति शुक्रवार को मातृ-सत्संग; दैनिक योगासन-वर्ग; प्रति मंगलवार को नारायण-सेवा; होमियोपैथिक औषधालय।

जयपुर, राजा पार्क (राजस्थान): प्रति गुरुवार को डेढ़ घण्टों पर्यन्त महामृत्युंजय मन्त्र का सामूहिक जप; प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण; प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग; सप्ताह के अन्य दिनों को दैनिक सत्संग; प्रति सोमवार को मातृ-सत्संग; स्वामी शिवानन्द होमियोपैथिक औषधालय द्वारा माह अक्तूबर, २००८ में ११०२ मरीजों के इलाज; दैनिक निःशुल्क योगासन-वर्ग; स्वामी शिवानन्द आध्यात्मिक पुस्तकालय; २५ अकिंचन विधवा स्त्रियों को रुपये ३७५० का दान; प्रतिदिन लगभग ३०० अकिंचनों को अन्नदान; कुष्ठरोगियों की एक संस्था में १०८ किलोग्राम कोरा राशन-वितरण; ८० छात्रों को शिष्यवृत्ति।

जाजपुर रोड (उड़ीसा): दैनिक पादुका-पूजा; प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग; 'शिवानन्द दिन' को भव्य पादुका-पूजा और नारायण-सेवा।

जयपुर (उड़ीसा): दैनिक द्विवार पूजाएँ; प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग; प्रति गुरुवार भक्तों के निवास-स्थानों पर चल-सत्संग; हवन; 'शिवानन्द दिन' को विशेष पूजा और प्रसाद।

कंटाबाँजी (उड़ीसा): ध्यान और भगवद् गीता के स्वाध्याय सहित प्रति रविवार को सत्संग।

खाटिगुडा (उड़ीसा): प्रति गुरुवार को सत्संग; श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र के साथ एकादशी-सत्संग; प्रति माह के प्रथम रविवार को 'मासिक साधना दिन'।

खुर्दा रोड, जटनी (उड़ीसा): कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि होने के कारण उस दिन 'मासिक साधना दिन' मनाया जाता है।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): स्वाध्याय सहित प्रति रविवार को सत्संग; एकादशी की तिथियों को अपराह्न में मातृ-मण्डल द्वारा और सायंकाल में पुरुष-वर्ग द्वारा संकीर्तन; पुरुष-वर्ग के लिए प्रभात में और सायंकाल में महिला-वर्ग के लिए दैनिक योगासन-वर्ग; निर्धन महिलाओं को आर्थिक सहाय।

कोठावालसा (आन्ध्र प्रदेश): प्रति सोमवार को सत्संग।

नाभा (पंजाब) : प्रति रविवार को स्वाध्याय सहित साप्ताहिक सत्संग।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): प्रार्थना-ध्यान-स्तोत्रपाठ सहित दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय सभा; श्री सुन्दरकाण्ड पारायण सहित प्रति शनिवार को मातृ-सत्संग; एकादशी की तिथियों को मातृ-सत्संग द्वारा श्रीमद् भगवद् गीता और श्री विष्णु सहस्रनाम सहित मातृ-सत्संग; प्रति माह की ३ तारीख को ६ घण्टों पर्यन्त अखण्ड महामन्त्र कीर्तन।

नई दिल्ली (वसन्त विहार) : प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग जिनमें प्रथम रविवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण; द्वितीय रविवार को संकीर्तन तथा ध्यान; तृतीय रविवार को गुरुदेव की पुस्तकों का स्वाध्याय और चतुर्थ रविवार को विशेष प्रवचन।

नीमापड़ा (उड़ीसा): दैनिक महामन्त्र संकीर्तन एक घण्टे पर्यन्त; प्रति गुरुवार को प्रभात में पादुका-पूजा

और सायंकाल में साप्ताहिक सत्संग; 'मासिक साधना दिन'।

पंचकुला (हरियाणा) : तैत्तिरीय उपनिषद् के स्वाध्याय सहित दैनिक सत्संग; दिव्य जीवन संघ की पुस्तकों के स्वाध्याय सहित साप्ताहिक चल-सत्संग।

फूलबानी (उड़ीसा): दैनिक पादुका-पूजा; प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग।

रायपुर (छत्तीसगढ़): प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग; प्रति सोमवार को एक घण्टा संकीर्तन; एकादशी की तिथियों को विशेष पूजा और श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पारायण।

राजकोट (गुजरात): प्रति गुरुवार तथा प्रति रविवार को द्विवार साप्ताहिक सत्संग; दो सत्संग-केन्द्रों में साप्ताहिक सत्संग, होमियोपैथिक औषधालय; ग्राम्य-विस्तारों में नेत्र-यज्ञ; निर्धन मरीजों को और विकलांग व्यक्तियों को आर्थिक तथा अन्य सहाय।

रंगबेड़ा (उड़ीसा): दैनिक प्रभातीय पादुका-पूजा; दैनिक सान्ध्य-सत्संग; प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग।

सालेपुर (उड़ीसा): द्विवार पूजाएँ; प्रार्थना, ध्यान और कीर्तन सहित दैनिक प्रभातीय सभा; एक घण्टा कीर्तन और एक घण्टा जप; स्तोत्र-पारायण; अध्ययन-वर्ग और सत्संग सहित दैनिक ढाई घण्टों का सत्संग; प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग; प्रथम शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण; प्रथम रविवार को श्रीमद् भगवद् गीता पारायण; तृतीय रविवार को 'साधना दिन'; द्वितीय रविवार को योगासन-ध्यान-वर्ग; 'शिवानन्द दिन' को प्रभात में पादुका-पूजा और 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र-उच्चारण एक घण्टे पर्यन्त तथा विशेष सान्ध्य-सत्संग; स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल अस्पताल।

सिकन्दराबाद (आन्ध्र प्रदेश): श्री शिवानन्द आश्रम में दैनिक रूप से १५० से २०० जनों को भोजन-वितरण।

साउथ बलाण्डा (उड़ीसा): प्रति शुक्रवार को साप्ताहिक सत्संग; दत्तक लिये हुए 'शिवानन्द सेवाग्राम' में मासिक चल-सत्संग 'चिदानन्द दिन' को प्रभात में पादुका-पूजा तथा सायंकाल में विशेष सत्संग; महामन्त्र का मासिक तीन घण्टों का अखण्ड कीर्तन; 'संक्रान्ति दिन' को प्रभात में पादुका-पूजा और सायंकाल में तीन घण्टों पर्यन्त महामृत्युंजय मन्त्र का अखण्ड जप।

सुनाबेडा (उड़ीसा): गुरुदेव की 'भक्तियोग' पुस्तक के स्वाध्याय सहित दैनिक सान्ध्य-सत्संग; प्रति गुरुवार और रविवार को पादुका-पूजा और 'भगवद् गीता' के स्वाध्याय सहित साप्ताहिक द्विवार सत्संग; महिला-वर्ग तथा पुरुष-वर्ग के लिए दो भिन्न टुकड़ियों में योगासन-वर्ग; आश्रम में निःशुल्क चिकित्सकीय सेवा।

सुनाबेडा, महिला शाखा (उड़ीसा): दैनिक पूजा; प्रभात में श्रीमद् भागवत का पाठ और जप; एक घण्टे पर्यन्त महामन्त्र संकीर्तन के साथ दैनिक सान्ध्य-सत्संग; प्रति बुधवार और शनिवार को साप्ताहिक द्विवार सत्संग; प्रति रविवार को अपराह्न में बालकों के लिए सत्संग; एकादशी की उभय तिथियों को पादुका-पूजा और श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पारायण; 'चिदानन्द दिन' को जप; प्रति मंगलवार को नारायण-सेवा।

वडोदरा (गुजरात): प्रति गुरुवार को सत्संग; 'शिवानन्द दिन' और 'चिदानन्द दिन' को पादुका-पूजा और मन्त्र-जप; होमियोपैथिक और आयुर्वेदिक चिकित्सालयों द्वारा समाज-सेवा; विशेष एक्युप्रेशर इलाज; और निर्धन मरीजों को औषधियों का वितरण।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): द्वितीय और चतुर्थ रविवार को पाक्षिक सत्संग।

विशाखपटनम् (आन्ध्र प्रदेश): दैनिक सान्ध्य-भजन-संकीर्तन; गुरुदेव के साहित्य के स्वाध्याय सहित साप्ताहिक सत्संग; प्रति एकादशी को ६ अध्यायों का गीता पारायण; पूर्णिमा को ध्यान; प्रतिदिन निःशुल्क योगासन-वर्ग और ध्यान; प्रति सोमवार को निःशुल्क चिकित्सकीय परीक्षण।

विदेशी शाखाएँ

हांगकांग (चीन): प्रति माह के द्वितीय शनिवार को गुरुदेव की पुस्तक 'THE VOICE OF HIMALAYAS' के स्वाध्याय सहित मासिक सत्संग जिसमें ५३ प्रतिभागियों की उपस्थिति; माह में ८८ प्रतिभागियों सहित अन्य शनिवारों को महामन्त्र का कीर्तन; १६९ नये तालीमार्थी सहित योगासन-वर्ग; ३५ प्रतिभागियों सहित योग-शिक्षकों की तालीम का पाठ्यक्रम।

सूचना

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चण्डीगढ़
शिवानन्द आश्रम की प्रथम वर्षगाँठ ७ व ८ मार्च २००९

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चण्डीगढ़ शाखा शिवानन्द आश्रम की प्रथम वर्षगाँठ ७ व ८ मार्च २००९ को मनाने जा रही है। इस अवसर पर क्षेत्रीय आध्यात्मिक सम्मेलन का भी आयोजन प्रस्तावित है। परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परमाध्यक्ष, द डिवाइन लाइफ सोसायटी तथा शिवानन्द आश्रम ऋषिकेश से वरिष्ठ सन्त-महात्मा अपनी उपस्थिति से इस अवसर पर शोभा बढ़ायेंगे। इस समारोह में सभी भक्तों को हार्दिक रूप से आमन्त्रित किया जाता है।

पंजीकरण व जानकारी हेतु कृपया सम्पर्क करें

श्री एफ. लाल. कन्सल, अध्यक्ष, ०९८१४०१५२३७
डा. रमणीक शर्मा, सचिव, ०९८१४१०५१५४

पता : शिवानन्द आश्रम, चण्डीगढ़ शाखा,
प्लाट नं. २, सेक्टर २९ ए, चण्डीगढ़, १६००३०, दूरभाष : ०१७२-२६३९३२२

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

आवश्यक सूचना

शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश में अतिथियों एवं अभ्यागतों-आगन्तुकों के स्वागतार्थ वर्तमान समय की माँग तथा सरकारी एजेंसियों की अपेक्षाओं-आदेशों के अनुसार हम कुछ नियमों-शर्तों के परिपालन के लिए बाध्य हैं।

शिवानन्द आश्रम मूलतः संन्यास आश्रम/एक आध्यात्मिक संस्था है, जहाँ के अन्तेवासी संन्यासी, ब्रह्मचारी और आध्यात्मिक साधना में रत साधक हैं। वे निष्काम सेवा करते हैं और दिनानुदिन के कार्यक्रमों में सामूहिक रूप से सम्मिलित हो कर तथा अपनी आध्यात्मिक साधना की तरंगों से तरंगित वातावरण को तथा आश्रम की पवित्रता को बनाये रखने में प्रयत्नशील रहते हैं।

आश्रम में कुछ समय ठहरने वाले अतिथियों एवं अभ्यागतों से आशा की जाती है कि वे आश्रम के आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल ही अपनी आश्रमवास-अवधि का आध्यात्मीकरण करें। पर्यटकों, सप्ताहान्त छुट्टी मनाने वालों तथा मात्र मौजमस्ती करने वालों को आश्रम में ठहरने की सुविधा प्राप्त करने की प्रत्याशा नहीं रखनी चाहिए। वे किसी अन्य स्थान पर ठहरें और आश्रम-दर्शनार्थ तथा प्रार्थना, ध्यान तथा योग आदि के लिए ही आश्रम में आयें।

अतिथियों तथा अभ्यागतों के लिए दिशा-निर्देशन :

(१) अतिथियों तथा अभ्यागतों को आश्रम में ठहरने की पूर्व-अनुमति प्राप्त करने के लिए महासचिव को पत्र, ई-मेल आदि के द्वारा पर्याप्त समय पूर्व अग्रिम सूचना देनी होगी, ताकि वे रवाना होने से पूर्व ही अनुमति-पत्र प्राप्त कर सकें। आश्रम-वास की अनुमति-प्राप्ति के लिए आवेदन-पत्र का प्रारूप निम्नलिखित अनुसार होगा :

१. पूरा नाम
२. लिंग और आयु
३. राष्ट्रीयता
४. निवास-स्थान/घर का पूरा पता
५. ई-मेल का पता
६. कोड सहित टेलीफोन/सैल नम्बर
७. पासपोर्ट/फोटो आइडी टाइप और नम्बर*
८. आपके परिचित आश्रमवासी का नाम/सम्बन्ध

---

* स्वागत-कार्यालय (Reception Office) में पहुँचने पर आपको पासपोर्ट अथवा कोई फोटो पहचान-पत्र अवश्यमेव प्रस्तुत करना होगा। यह सरकारी नियमानुसार आवश्यक जरूरत है।

९. व्यवसाय-नौकरीपेशा तथा संक्षिप्त आध्यात्मिक पृष्ठभूमिका

१०. क्या आप दिव्य जीवन संघ से सम्बद्ध हैं? तो किस रूप में, कैसे?

११. आगमन का उद्देश्य

१२. आपके साथ आने वालों की संख्या (उनके नाम, लिंग और आयु उल्लेख सहित)

१३. आगमन की तिथि-तारीख

१४. प्रस्थान की तिथि-तारीख

(२) आश्रम-आवास के लिए फोन पर अनुमति लेना मान्य नहीं होगा।

(३) अतिथियों तथा अभ्यागतों को स्वागत-कार्यालय द्वारा जो आवास-स्थान दिया जायह्नह्नपूर्ण सहयोग सहित उसके साथ उन्हें एडजस्ट करना होगा।

(४) आश्रम-वास करते हुए अतिथियों तथा अभ्यागतों को आश्रम के समस्त कार्यक्रमों में उपस्थित रहना होगा; विशेष रूप से प्रातः ध्यान-कक्षा में और रात्रि-सत्संग में।

(५) अतिथियों-अभ्यागतों की अपने मूल्यवान् सामान का ध्यान स्वयमेव रखना होगा। किसी भी प्रकार की हानि-नुकसान के लिए आश्रम-प्रबन्धन उत्तरदायी नहीं होगा।

(६) स्वागत-कार्यालय का नियत कार्य समय प्रातः ६ बजे से रात्रि १० बजे तक है। रात्रि १० बजे से प्रातः ६ बजे तक कार्यालय बन्द रहेगा। अतः अतिथियों-अभ्यागतों से अनुरोध है कि वे अपनी यात्रा का कार्यक्रम इस प्रकार सुनिश्चित करें कि वे स्वागत-कार्यालय के कार्य-समय के अन्दर ही आश्रम में पहुँचें।

(७) बिना पूर्व-सूचना दिये एवं पूर्व-अनुमति लिये आश्रम में ठहरने हेतु आने वाले अतिथियों तथा अभ्यागतों के अनुरोध पर गौर नहीं किया जायेगा।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के लिए सूचना

शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश आने वाले अतिथियों-अभ्यागतों की सिफारिश करने वाली शाखाओं से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त दिशा-निर्देशों का अनुपालन करें।

शाखाएँ अपने सदस्यों/भक्तों का आश्रम मुख्यालय में आने के लिए सिफारिश सदा कर सकती हैं, किन्तु पूर्व अग्रिम सूचना देने और अनुमति-स्वीकृति-प्राप्ति सुनिश्चित हो।

बिना पूर्व-सूचना दिये एवं पूर्व-अनुमति प्राप्त किये शाखाओं से सिफारिशी पत्र लाने पर भी मुख्यालय में आवास-उपलब्धि हेतु आने वाले सदस्यों, भक्तों, अतिथियों और अभ्यागतों को आश्रम में ठहरने की (स्वीकृति) अनुमति प्राप्त नहीं हो सकेगी।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी